टीका उपलब्ध करवाने के लिए विचित्र संधि

पश्चिम अफ्रीका में एबोला का खतरा टला नहीं है और इसके फिर से सिर उठाने की आशंका है। इसे देखते हुए वैश्विक टीकाकरण गठबंधन गावी ने घोषणा की है कि उसने दवा कंपनी मर्क को 50 लाख डॉलर का भुगतान कर दिया है और शर्त यह है कि वह एबोला वायरस के खिलाफ टीके का भंडारण करके रखेगा। मर्क द्वारा विकसित टीका वह पहला टीका है जिसने क्लीनिकल परीक्षण के दौरान एबोला वायरस के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करने की आशा जगाई है। यह पहली बार है कि किसी सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठन ने ऐसा टीका खरीदने का अनुबंध किया है जिसे अभी तक लायसेंस तक नहीं मिला है।

इस अनुबंध की एक शर्त के रूप में मर्क ने वायदा किया है कि वह अपने टीके को नियामक संस्थाओं से वर्ष 2017 तक मंज़ूरी दिलवा लेगा। और तो और, कंपनी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से अनुमति चाही है कि यदि टीके को लायसेंस मिलने से पहले एबोला महामारी फैल जाती है तो वह टीके का उपयोग कर सके और कम से कम 3 लाख खुराकें मई तक उपलब्ध करा सके। गावी का कहना है कि उसने यह अनुबंध इसलिए किया है ताकि संभावित महामारी की स्थिति में टीका पहले से उपलब्ध रहे।

दरअसल, सिएरा लिओन में 15 जनवरी को एबोला की पुनरावृत्ति हुई, जबकि इसके ठीक एक दिन पहले विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घोषित किया था कि पश्चिम अफ्रीका में वायरस का प्रसार थम गया है। गावी के मुताबिक इसका मतलब है कि टीका तैयार रखने में ही भलाई है।

दूसरी ओर, जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों को लगता है कि यह एक गलत नज़ीर होगी। इसके अलावा, हो सकता है कि पश्चिम अफ्रीका में जैसे ही महामारी का खतरा टलेगा टीके के भंडारण, लायसेंसिंग और खुराक देने की प्रक्रिया को दरकिनार कर दिया जाएगा। यह एक विचित्र स्थिति है। पहले ही मर्क, जॉनसन एंड जॉनसन और ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन ने तीन अलग-अलग संभावित टीकों की 20 लाख खुराकें जमा कर ली हैं। 20,000 से ज़्यादा लोगों को टीका दिया जा चुका है और कई हज़ारों को निकट भविष्य में दे दिया जाएगा। मगर इन्हें अभी लायसेंस नहीं मिला है। यहां तक कि इन तीनों में से एक भी टीके को नियामक संस्थाओं की मंज़ूरी के लिए पेश तक नहीं किया गया है। अभी सिएरा लिओन और गिनी में इनका उपयोग क्लीनिकल परीक्षण के नाम पर करने का अनुबंध है। मगर दिक्कत यह है कि एक गैर-मंज़ूरीशुदा उत्पाद का उपयोग करने के लिए व्यक्ति को इसकी सूचना देनी होती है और उसकी लिखित सहमति प्राप्त करनी होती है। इसके अलावा प्रत्येक मरीज़ का विस्तृत रिकॉर्ड भी रखना पड़ता है और देखना होता है कि इसके साइड प्रभाव क्या हैं। अब यदि यह टीका कारगर व सुरक्षित साबित हो चुका है तो नैतिकता का तकाज़ा होगा कि सब लोगों को इसका लाभ मिले।

गावी का अनुबंध इन समस्याओं से बचने के लिए चाहता है कि मर्क विश्व स्वास्थ्य संगठन से 'आपातकालीन' उपयोग की अनुमति ले ले ताकि क्लीनिकल परीक्षण के बगैर ही इसका उपयोग किया जा सके। ***(स्रोत फीचर्स)***